eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों पर प्रभाव

ज्योती वर्मा[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, लाला महादेव प्रसाद वर्मा बालिका महाविद्यालय, लखनऊ

Received: 20 July 2025, Accepted: 25 July 2025, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2025

Abstract

ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो मुख्यतया इंटरनेट कनेक्शन, मोबाइल, लैपटॉप आदि इलेक्ट्रॉनिक उपकरण से संभव है। अर्थात एक ऐसी शिक्षा जिसे छात्र इंटरनेट कनेक्शन से प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा या ई लर्निंग सबसे अधिक प्रभावी कोरोना महामारी के दौरान हुई। शिक्षा परंपरागत क्लासरूम में छात्रों को मिलना बंद हो गई थी तब एक समस्या समाधान के रूप में ऑनलाइन शिक्षा या ई लर्निंग को शिक्षा जगत के क्षेत्र में अपनाया गया। इस लेख का प्रमुख उद्देश्य उन सभी प्रभावों को जानना है जो ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थियों के जीवन में उत्पन्न होते हैं, चाहे वे प्रभाव सकारात्मक अथवा नकारात्मक नकारात्मक हो। शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि ऑनलाइन शिक्षा किस प्रकार छात्रों के शैक्षणिक मानसिक और सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालती है।

कूट शब्द– ऑनलाइन शिक्षा, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, विद्यार्थी, प्रभाव।

Introduction

ऑनलाइन शिक्षा को इलेक्ट्रॉनिक शिक्षा जा सकता है ऑनलाइन शिक्षा के लिए (CBT) सीबीटी (कंप्यूटर आधारित प्रशिक्षा), (IBT)आईबीटी (इंटरनेट आधारित प्रशिक्षा), डब्ल्यूबीटी (WBT) (वेब आधारित प्रशिक्षा) जैसे शब्दों का भी प्रयोग रहा है ।कोरोना काल में WHO के गाइडलाइन के अनुसार शारीरिक दूरी के चलते, शिक्षा का तकनीकीकरण दिया गया। शिक्षा ऑनलाइन माध्यम से दी जाने लगी। काले रंग के ब्लैक बोर्ड को हटाकर स्मार्ट बोर्ड परिवर्तन जैसा परिवर्तन, ऑनलाइन शिक्षा का ही प्रभाव है। देखा जाए तो काफी लंबे समय से सरकार का प्रयास रहा है कि शिक्षा को ऑनलाइन कराया जाए इसके लिए सरकार ने कई प्लेटफार्म विकसित किए हैं जैसे स्वयं प्रभा, ई पाठशाला, निष्ठा, दीक्षा पोर्टल जो ज्ञान आदान–प्रदान करने के लिए डिजिटल अवसंरचना के रूप में काम करते हैं। दीक्षा पोर्टल का लॉन्च हमारे उपराष्ट्रपति ने औपचारिक रूप से 5 सितंबर 2017 में किया था। यह पोर्टल शिक्षकों, छात्रों, अभिभावक तीनों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी का स्रोत है । इस पोर्टल पर कुल 18 भाषाये उपलब्ध है। साथ ही साथ सरकार का यह प्रयास रहा है कि हर कक्षा के लिए एक अलग चैनल हो ताकि शिक्षा हर व्यक्ति के लिए सर्वसुलभ हो सके। आज समाज में कोई भी व्यक्ति शिक्षा से वंचित न रहे। विशेषतया दूर दराज या पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले छात्र, जो सामान्य कॉलेज या विद्यालय या स्कूलों तक पहुंचने में पहुंचने में असफल है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने ऑनलाइन शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए **'भारत पढ़े ऑनलाइन'** नामक कार्यक्रम की पहल की है।

ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के लिए कोई समय सीमा निर्धारित नहीं करती है छात्र चाहे तो हफ्ते के सातों दिन और 24 घंटे अपनी पढ़ाई अनावश्यक रूप से जारी रख सकते हैं ऑनलाइन शिक्षा मैं छात्र ऑनलाइन नोट्स भी बना सकते हैं, पेपरलेस पद्धति आधारित होते हैं। वह हमारे पर्यावरण के लिए भी एक अच्छी पहल है, इससे पेड़ों की कटाई पर कुछ आशिक कमी जरूर आएगी। ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को पूरी

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

एकात्मकता के साथ अध्ययन करने अवसर का प्रदान करती है। छात्र बिना किसी संकोच के सवाल पूछ सकते हैं। और शिक्षक यदि उनसे कोई प्रश्न पूछता है, तो बिना किसी संकोच के उत्तर देने में भी छात्र सफल होंगे। छात्रों के व्यक्तिगत विकास में ऑनलाइन शिक्षा अवश्य ही मील का पत्थर साबित हो सकती है।

शिक्षा जो हमारे समाज के स्वास्थ्य विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा न केवल रोजगार परक है। बल्कि एक संतुलित ,संयमित समाज के समुचित विकास के लिए भी आवश्यक है। मनुष्य को मनुष्य शिक्षा बनती है। प्राचीन समय में मानव घर पर ही जीवन कैसे जीना है? आदि की शिक्षा ग्रहण कर लेता था। फिर धीरे–धीरे समय बीतने के साथ गुरुकुल परंपरा प्रारंभ हुई, जिसमें बालक शिक्षा ग्रहण हेतु अपने घर, परिवार और गांव से दूर प्रकृति के शांत वातावरण में शिक्षा ग्रहण करने हेतु अपने घर का परित्याग करता था। शिक्षा के इस स्वरूप को हम औपचारिक शिक्षा का सकते हैं। जिसे आज के समय में हॉस्टल शिक्षा के नाम से भी जाना जाता है। कालांतर में शिक्षा का यह मॉडल भी परिवर्तित हुआ। और शिक्षा स्कूलों कॉलेज विश्वविद्यालय कोचिंग सेंटर आदि जगह दी जाने लगी। एक निश्चित समय, पाठ्यक्रम और शिक्षक कुल मिलाकर एक नई शिक्षा प्रणाली विकसित हो गई। शिक्षा की इस प्रणाली में छात्रों को रोज अपने घर से दूर इन शिक्षा संस्थानों तक पहुंचाना अनिवार्य हो गया। जैसा की विगत वर्षों में आई महामारी कोरोनावायरस ने समस्त समाज का संतुलन बिगाड़ दिया था। ऐसे में मानव जीवन का परंपरात्मक ढांचा भी बदल गया। लोगों का घर से निकलना, दूसरे लोगों से मिलना– जुलना बंद हो गया। ऐसे में समाज में शिक्षा जो पूरी तरह औपचारिकता से परि– पूर्ण है, उसमे बदलाव करना आवश्यक हो गया। जो शिक्षा स्कूलों, कॉलेज और कोचिंग सेंटर से छात्रों को मिल रही थी, कोरोना महामारी के चलते ऐसा संभव नहीं रहा। अर्थात छात्र शिक्षण संस्थान पर भौतिक से उपस्थित नहीं रह सकते थे। ऐसी कई अधिकांश चीजें ऑनलाइन हो गई। उदाहरण के लिए ऑफिस में जाकर लोगों ने काम करने के बजाय वर्क फॉर होम शुरू किया। ऐसा ही कुछ बंदोबस्त शिक्षा प्रणाली के लिए भी किया गया, जिसे हम ऑनलाइन शिक्षा कह सकते हैं। अर्थात ई लर्निंग केलिए कंप्यूटर, लैपटॉप मोबाइल, इंटरनेट आदि की आवश्यकता होती है। तभी चीज ऑनलाइन संभव है। देश के सभी स्कूलों में ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली को शुरू कर दिया गया। ऐसे में सरकारी स्कूलों के बजाय प्राइवेट स्कूलों में ऑनलाइन शिक्षा अधिक प्रभावी दिखाई पड़ी ग्रामीण ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक संस्थाओं के स्थान पर शहरी क्षेत्र के शिक्षण संस्थानों को ऑनलाइन शिक्षा में अधिक सफलता प्राप्त हुई और ऑनलाइन शिक्षा का वास्तविक लाभ के इन्हीं वर्गों पर अधिक दिखाई देता है।

अगर हम स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को छोड़ दे तो और विश्वविद्यालय व कॉलेज यूनिवर्सिटी मैं पढ़ने वाले युवक विद्यार्थियों की तरफ अपना ध्यान केंद्रित करें, तो स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि वास्तव में इन्हीं विद्यार्थियों पर ऑनलाइन शिक्षा का सबसे अधिक व्यापक और गहरा प्रभाव पड़ा है। ऑनलाइन शिक्षा का एक और प्रभाव उन विद्यार्थियों पर भी देखा जा सकता है जो शिक्षण संस्थानों से मीलो दूर पर रहते हैं। साथ ही साथ उन छात्रों पर भी ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव अधिक देखा जा सकता है, जो शारीरिक रूप से किसी न किसी कमी से प्रभावित है, और शिक्षा संस्थानों तक पहुंचने में असफल है। ऑनलाइन शिक्षा इन्हीं छात्रों के लिए एक ऐसे विकल्प के रूप में उभरी है जिसकी शायद ही किसी ने कल्पना की होगी।

ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का आकलन अपने लेख में किस प्रकार हम करेंगे–

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

ऑनलाइन शिक्षा या ई लर्निंग का प्रभाव विद्यार्थियों पर सकारात्मक अध्ययन नकारात्मक दोनों रूपों में जा सकता है। अन्य शब्दों में ऑनलाइन शिक्षा जहां विद्यार्थियों के लिए एक और उनके जीवन और विकास पथ में पूरी तरीके से सहयोगी है वहीं दूसरी और विद्यार्थियों के लिए प्रगति मे अवरोध भी उत्पन्न करती है। कुल मिलाकर ऑनलाइन शिक्षा बहुत सीमा तक विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक ही साबित हुई है लेकिन हम यहां पर ऑनलाइन शिक्षा के नकारात्मक पक्षों पर भी अपना ध्यान डालेंगे ।

ऑनलाइन शिक्षा के सकारात्मक पहलू निम्न है –

1. औपचारिकता की समाप्ति– ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों को स्कूल या कॉलेज में समय से पहुंचने की कोई पाबंदी नहीं होती। ऐसे में ई लर्निंग का प्रभाव छात्रों पर अधिक देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए जो छात्र आने जाने में असमर्थ है वे विद्यार्थी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। असमर्थकता इस अर्थ में कि वह शारीरिक रूप में कमी ग्रस्त हो हो सकते हैं अथवा कोई अन्य कारण हैं। जैसे भारत में रहने वाले छात्र विदेश जाने में असफल है। वह अपने ही देश में रहकर विदेश से ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। और उसकी डिग्री या डिप्लोमा भी संबंधित संस्थान से प्राप्त कर सकते हैं, जहां उन्होंने पढ़ाई ऑनलाइन कि थी। ई–लर्निंग या ऑनलाइन में छात्र की भौतिक उपस्थित शिक्षण संस्थानों में अनिवार्य नहीं है। छात्र कहीं से भी कभी भी ऑनलाइन अपनी पढ़ाई आसानी से करने में सक्षम है। इसके साथ ही साथ ऑनलाइन पढ़ाई करने वाले छात्रों को ऑनलाइन ही डिग्री व डिप्लोमा संस्थाओं से प्रदान कर दिए जाते हैं। ऐसे में छात्रों पर ऑनलाइन शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है। और अधिक से अधिक विद्यार्थियों तक शिक्षा की पहुंच भी संभव हुई है ई लर्निंग के कारण। आज देखा जाए तो हमारे समाज का एक बड़ा जनसंख्यात्मक हिस्सा ऑनलाइन शिक्षा ही ग्रहण कर रहा है। व्यावसायिक शिक्षा से लेकर पैसै कहीं बाजार में लगाना हो, अथवा कोई नई तकनीकी सीखनी हो, हर व्यक्ति ई लर्निंग का ही सहारा लेता नजर आ रहा है। महिलाएं जो घर पर अकेली रहती है, वह भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म खासकर यूट्यूब से बहुत कुछ सीख रही है। और उसे अपने जीवन में उतर रही है। जैसे सिलाई सीखना, खाना बनाना, रूम डेकोरेशन अथवा बच्चों को कैसे शिक्षा दी जाए। उनका समाजीकरण किस प्रकार अच्छे से वह कर सकती है इत्यादि चीज महिलाएं ऑनलाइन ही सीख रही है।

2. कम पैसों में शिक्षा अथवा किफायती शिक्षा– ऑनलाइन शिक्षा की तुलना अगर पारंपरिक शिक्षा से की जाए, तो आनलाइन शिक्षा अधिक सस्ती व सुविधाजनक सभी विद्यार्थियों के लिए साबित हुई है। ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों को परंपरागत शिक्षा की तरह कहीं जाने की आवश्यकता ही नहीं होती। ऐसे में छात्रों के धन का बड़ा हिस्सा, जो छात्र यातायात अथवा आवागमन में खर्च करते हैं वह बच जाता है। इसके अलावा परंपरागत शिक्षा में अगर आप विद्यालय नहीं जाते, तो विद्यार्थी शिक्षा अथवा ज्ञान अर्जन में पीछे रह जाता है। इसलिए अधिकांश छात्र जो शिक्षण सामग्री को दोबारा समझना चाहते हैं। कोचिंग या ट्यूशन से जुड़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में कोचिंग और ट्यूशन से जुड़ने वाले विद्यार्थियों का धन अधिक खर्चा हो जाता है। लेकिन ऑनलाइन शिक्षा में विद्यार्थियों की इस समस्या का भी समाधान है। यदि किसी कारण वश विद्यार्थी की ऑनलाइन अथवा रेगुलर क्लास छूट जाती है, तो अन्य किसी भी समय विद्यार्थी अपना रेगुलर क्लास को देख सकता है। चाहे रात्रि के 12:00 ही क्यों ना बज रहे हो यानी कि ऑनलाइन शिक्षा में रिकॉर्ड क्लासेस भी उपलब्ध रहती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

3. आने जाने की आवश्यकता खत्म– ऑनलाइन शिक्षा में यह आवश्यक नहीं है कि विद्यार्थी ने जिस संस्थान में प्रवेश लिया हो, वहां विद्यार्थी को रोज नियमित रूप से समय से पहुंचना अनिवार्य हो। ई–लर्निंग अथवा ऑनलाइन शिक्षा आपको यह सुविधा उपलब्ध कराती है कि विद्यार्थी जहां भी है वहीं से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा के लिए उन्हें शिक्षण संस्थान में जाने की आवश्यकता ही नहीं है। ऐसे में छात्रों को यातायात के दौरान होने वाली समस्याएं से अपने आप से छुटकारा मिल जाता है। बस ऑनलाइन शिक्षा के लिए छात्रों के पास कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप, टैबलेट के साथ में अच्छा इंटरनेट कनेक्शन होना चाहिए। आपको अपना घर या निवास छोड़ने की जरूरत नहीं है। छात्र बैठे ही आसानी से ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

4. समय की कटौती– ऑनलाइन शिक्षा सभी छात्रों को उनकी गति से अध्ययन करने का अवसर प्रदान करती है। ऐसे में प्रत्येक छात्र राहत व सुविधा का अनुभव करते हैं। और तनाव और चिंता से भी मुक्त रहते हैं। जिन छात्रों को कोई टॉपिक या विषय एक बार में ही समझ आ जाता है, तो वह अपना समय उसी टॉपिक को देखने व समझने में नहीं लगते हैं। और दूसरी और जिस किसी भी छात्र को कोई टॉपिक या विषय एक बार में समझ नहीं आता है वह छात्र दोबारा ऑनलाइन देख सकता है। ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा मैं प्रत्येक छात्र के अवसर समान रूप से रहते हैं कि वह एक टॉपिक को कई बार देखे अथवा एक बार में ही समझ सकता है। यह उसके अध्ययन की गति पर निर्भर करता है। जिससे छात्र भी संतुष्ट रहते हैं छात्रों का समय भी बचता है। जिसका प्रयोग विद्यार्थी अपने अन्य कामों में लगा सकते हैं। जैसे अंशकालिक नौकरी या जिम्मेदारियां को निभाने में। समय बचने की दशा में छात्र अपनी शिक्षा व परिवार के बीच अच्छा सामंजस या तालमेल भी आसानी से बिठा सकता है।

5. जहां शिक्षण संस्थान नही, वहां भी शिक्षा– ऑनलाइन शिक्षा ऐसे क्षेत्र के लिए वरदान साबित हुई है, जहां पर शिक्षा संस्थान या उच्च शिक्षा संस्थान उपलब्ध नहीं है। अथवा उपलब्ध भी है तो बहुत कम मात्रा में। ऐसे क्षेत्र के लिए ऑनलाइन शिक्षा अच्छा मार्ग साबित हो सकती है। और यहां रहने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा की उपलब्धता भी सुनिश्चित हो सकती है, ऑनलाइन शिक्षा के जरिए। अर्थात रिमोट एरियाज में भी विद्यार्थी आसानी से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इन क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है। अर्थात हर छात्र अपने जीवन में विकास के पद पर ऑनलाइन शिक्षा के जरिए आगे बढ़ सकता है, और समाज में अपनी एक अलग पहचान बन सकता है।

जहां एक और ऑनलाइन शिक्षा के विद्यार्थियों पर अनेक तरह के सकारात्मक प्रभाव देखे गए हैं, वहीं दूसरी और विद्यार्थियों पर ऑनलाइन शिक्षा के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखे जा सकते हैं। वे नकारात्मक प्रभाव ऑनलाइन शिक्षा के इस प्रकार है–

1. संसाधनों की कमी– ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों के पास मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर, व एक अच्छा इंटरनेट कनेक्शन होना चाहिए। ऐसे में वे सभी छात्र ऑनलाइन शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। जिनके पास तकनीकी उपलब्धता नहीं होती। अथवा अगर किसी विद्यार्थी को ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करनी है, तो उसे एक धन का बड़ा हिस्सा इस तकनीकी संसाधन उपलब्धता में लगाना होगा। इस दशा में वे सभी छात्र की लर्निंग का लाभ लेने में असफल होंगे, जिनके पास इलेक्ट्रॉनिक संसाधन उपलब्ध नहीं होंगे। अर्थात ऑनलाइन शिक्षा समाज में रहने वाले निर्धन या मध्यम वर्गी छात्रों की पहुंच से बहुत से अभी बहुत दूर है। कभी कभार एक ही घर में कई भाई बहन होते हैं, ऐसी स्थिति में हर बच्चे के पास हर समय इलेक्ट्रॉनिक संसाधन

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

उपलब्धता नहीं रहती। ऐसे में कई छात्र ऑनलाइन शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। अथवा अधूरी जानकारी ही प्राप्त कर पाते हैं। ऑनलाइन शिक्षा की यह एक बहुत बड़ी कमी है।

2. प्रभावी संचार की कमी– ऑनलाइन शिक्षा में परंपरागत शिक्षा की तरह आमने–सामने का संचार संभव नहीं होता। यह ऑनलाइन शिक्षा की एक अन्य कमी साबित हुई है। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से प्रयोगात्मक विषयों को पढाना समझना अत्यंत कठिन साबित होता दिख रहा है। ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों का अपने शिक्षक से प्रभावी संचार संभव नहीं होता, ऐसे में छात्रों की बहुत सी समस्याएं अनसुलझी रह जाती है, जिनका समाधान शायद ही संभव हो पता है।

3. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं– ऑनलाइन शिक्षा में विद्यार्थियों को लगातार स्क्रीन के सामने शिक्षा ग्रहण हेतु बैठना पड़ता है। ऐसे में विद्यार्थियों में कुछ स्वास्थ्य या शारीरिक संबंधी समस्याएं आ जाती है जैसे कमर में दर्द होना, आंखों में मैं दर्द होना अथवा सर दर्द, अन्य समस्याएं।

अध्ययन के उद्देश्य– इस शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि ई शिक्षा विद्यार्थियों शैक्षणिक ,मानसिक और सामाजिक विकास पर किस तरह प्रभाव डालती है। साथ ही उनके स्वास्थ्य पर ई शिक्षा का क्या प्रभाव है। इस शोध ई शिक्षा के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तथ्यों की विवेचना की जाएगी। साथ ही यह शोध दर्शाएगा कि अलग–अलग आयु के विद्यार्थियों, उनकी सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमियों के आधार पर ऑनलाइन शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ता है। और विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में क्या अंतर दिखाई देते हैं। अंततः यह शोध यह सुझाव देगा कि ऑनलाइन शिक्षा को विद्यार्थियों के लिए कैसे और बेहतर व प्रभावी बनाया जा सकता है। यहां प्रस्तुत यह शोध यह भी समझने का प्रयास करेगा कि कैसे ई–लर्निंग विद्यार्थियों के बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन, सामाजिक विकास और उनके स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान करेगी

निष्कर्ष– ऑनलाइन शिक्षा अवश्य ही सभी विद्यार्थियों के लिए नई संभावनाओं को लेकर आई है लेकिन भविष्य में इसके दीर्घकालिक प्रभाव भी हो सकते हैं जो विचारणीय है। यह स्पष्ट है कि आज शिक्षा में तकनीकी संसाधनों का उपयोग महत्वपूर्ण है लेकिन इन्हें लागू करने के लिए हमारे पास सुरक्षित एवं संतुलित तरीका भी होना चाहिए। जिससे भविष्य में छात्रों को किसी भी तरह की समस्या का सामना न करना पड़े। शैक्षिक संस्थान और सरकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा के साथ–साथ मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के विकास के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान किया जाए। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों को ई–लर्निंग अथवा ऑनलाइन शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने का हर सफल प्रयास सरकार और शैक्षिक संस्थानों को अवश्य ही करना चाहिए ताकि भविष्य में ऑनलाइन शिक्षा और अधिक प्रभावी और व्यापक बनाया जा सके। साथ ही विद्यार्थियों के अवसाद भी प्रबंधन होगा।

अवश्य ही ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थियों को उनकी गति से अध्ययन करने का अवसर उन्हें प्रदान करती है और उन्हें नवीन जानकारी से परिचित कराती है। पढ़ाई में लचीलापन भी देती है। अधिकांशतः ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव ही देखने को मिला। हालांकि यह भी अनुभव किया गया, कि ऑनलाइन शिक्षा में भी पारंपरिक शिक्षा की तरह छात्रों को सिखाने में कठिनाई होती है। और पूरी तरह से ध्यान लगाने में भी कई तरह की समस्याओं का सामना विद्यार्थियों को करना पड़ता है। निश्चय ही भविष्य में हमें ऑनलाइन शिक्षा का विद्यार्थियों पर बहुत गहरा और व्यापक प्रभाव देखने को मिलेगा। लेकिन

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

ऑनलाइन शिक्षा के मार्ग में आने वाली बधाओ और चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए।

सन्दर्भः

- KHARE, D. M., & VERMA, D. B. (Eds.). (2021). BHARAT ME SHIKSHA-NETI KI DASHA EVAM DISHA. SHREE VINAYAK PUBLICATION.
- Pandey, R., Singh, V. S. S., Pandey, S. S., & Singh, S. A. (2019). General Studies Paper 1 2020 (Hindi). Pearson Education India.
- अग्रवाल, जे.सी. (2010). डेवेलपमेंट ऑफ एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया, नई दिल्ली, शिप्रा पब्लिकेशन्स.
- अंसारी, एम.एम. (1988). डिटरमाइनेट्स ऑफ कोस्ट्स इन डिस्टेंस एजुकेशन, इन कौल, बी.एन. सिंह, बी. एवं अंसारी एम.एम. स्टडीज इन डिस्टेंस एजुकेशन, नई दिल्ली, ए.आई. यू. एवं इग्नू.
- पाण्डेय, आर.एस. – 'एजूकेशन एस्टर डे एण्ड टुडे' (एक विश्लेषण) हॉरिजन पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 1997.